B.A. Part-II Psychology (Subsidiary)

Teacher - A.K. Sinha

Topic — Types of Psychopathology

मानव प्राणी अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार की भूलें करता है। इनमें से अधिकांश अनजाने में या संयोगवश हो जाती है जिनका व्यक्ति कोई विशेष महत्व नहीं देता है। ऐसी भूलों की सूचि बनाना तो संभव नहीं है फिर भी कुछ ऐसी भूलें हुआ करती है जिसकी व्याख्या मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से की जा सकती है। Freud के अनुसार ऐसी भूलें निम्नांकित प्रकार के होते हैं।

1. नामों को भूलना (Forgetting of Name) :—
प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति अपने परिचित व्यक्ति, स्थान तथा वस्तुओं को भूल जाता है। इस तरह की भूलों का कोई स्पष्ट कारण भी पता नहीं चलता है। Freud ने इस तरह की भूलों का कारण व्यक्ति की इच्छा बताया है। Freud के अनुसार भूलना एक चयनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति उन्हीं विषयों को भूलता है जिसे अचेतन रूप से भूल जाना चाहता है। इस प्रकार दैनिक जीवन में कभी परिचित व्यक्तियों, स्थानों या महत्वपूर्ण वस्तुओं को भी अचेतन रूप से भूलने की इच्छा रखने के कारण ही भूलते हैं। Freud ने इस प्रकार की भूलों की व्याख्या करने के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

इन्होंने उदाहरण के रूप में क नाम के व्यक्ति को प्रस्तुत किया है। जो एक युवती से प्रेम करता था, परन्तु उसके प्रेमभाव से युवती पूर्णतः अनभिज्ञ थी। यद्यपि प्रेम प्रसंग एक तरफा था। कुछ दिन के बाद युवती की

शेष पृष्ठ-2 पर

शादी 'ख' नाम के व्यक्ति के साथ हो गई जिसे 'क' नाम का व्यक्ति पहले से जानता था, क्योंकि दोनों किसी व्यापार के साथी थे। लेकिन 'ख' की शादी उस युवती के साथ हो जाने के बाद 'क' नाम का व्यक्ति 'ख' का नाम अचानक भूल गया और जब भी भेंट होती थी तो ख का नाम और पता दूसरे व्यक्ति से पूछता था। Freud ने इसकी व्याख्या करते हुए बताया है कि 'क' नाम का व्यक्ति वस्तुतः अपने पूर्व परिचित मित्र 'ख' के नाम का अपना परिचय भूल जाना चाहता था, क्योंकि वह मानता 'ख' नाम का व्यक्ति उसका प्रतिद्वन्दी बन गया था और 'क' को अपने प्रेम में निराशा हुई। इस प्रकार उसकी यह इच्छा अचेतन से उत्पन्न होकर अचेतन में ही दमित हो गई। इस प्रकार 'ख' के नाम को भूल जाने से उसके अचेतन में दमित इच्छा (युवती से विवाह करने की इच्छा) की संतुष्टि होती है और दूसरी तरफ व्यक्ति के मन में उत्पन्न निराशा एवं द्वेष के कारण उत्पन्न तनाव की स्वाभाविक निराकरण भी हो जाता है। अतः स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के नामों को अनजाने में भूलने के पीछे अचेतन में दमित इच्छाओं का महत्वपूर्ण हाथ होता है।

2. बोलने की भूलें (Slip of tongue) :—
व्यक्ति से प्रतिदिन प्रायः बोलने के क्रम में छोटी-छोटी गलतियाँ होती रहती हैं, जैसे अविवाहित महिला को श्रीमती या कुमारी (miss)

शेष पृष्ठ-3 पर

का सम्बोधन करने के प्रस्ताव पर श्रीमान या मैडम (Mrs) का सम्बोधन करना, किसी व्यक्ति की प्रशंसा करते करते एक आधा शब्द अपशब्द का बोल देना इत्यादि Freud ने इन्हीं गलतियों के पीछे भी अचेतन का कारण होना माना है। इस सम्बन्ध में Brown ने अपने एक मित्र का उदाहरण प्रस्तुत किया है, Brown के मित्र को अपने ऊपर अधिक गर्व था वह अपने को मित्रों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ समझता था तथा दूसरों को उतना महत्व नहीं देता था। एक बार सामान्य रूप से उसे कहना था - 'क्या मैं इस महान लेख पर अपना साधारण विचार प्रकट कर सकता हूँ? (May I offer a few moderate remarks on this very brilliant paper?) परन्तु वह कह बैठता है - 'इस निम्न कोटि के निबन्ध पर क्या मैं अपना महान विचार प्रकट कर सकता हूँ? (May I offer a few brilliant remarks on this very modest paper?)' इसी तरह Freud ने भी अपने एक युवा चिकित्सक से हुई बोलने की गलती का जिक्र किया है। वह युवा चिकित्सक किसी सभा में 'डॉ० विकॉफ' के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए सभा में स्वयं अपने को 'डॉ० विकॉफ' कह कर सम्बोधित किया, जब वहाँ पर उपस्थित लोगों ने यह जानना चाहा कि क्या उसका नाम 'डॉ० विकॉफ' ही है, तो उसे अपनी गलती का अनुभव हुआ। Freud ने इसका विश्लेषण करते हुए बताया कि वास्तव में वह व्यक्ति अपने को 'डॉ विकॉफ' जैसा ही महान वैज्ञानिक सिद्ध करना चाहता था जो अचेतन रूप से उसके सम्मान में बोलते समय बोलने की भूल के रूप में प्रकट हुई।

शेष पृष्ठ-4 पर

3. लिखने की भूलें (Slip of Pen) :—

व्यक्ति के दैनिक जीवन में लिखने की भूलें भी देखी जाती हैं। Freud महोदय ने इसे भी Psychopathology of everyday life की श्रेणी में रखा है। इनके अनुसार इस प्रकार की भूलें भी अकारण नहीं होती हैं बल्कि इसके पीछे भी अचेतन में दमित इच्छाओं का हाथ होता है। इस सम्बन्ध में Brown द्वारा दिया गया उदाहरण उल्लेखनीय है। Brown का एक मित्र जो इंग्लैण्ड जाना चाहते थे, परन्तु किसी कारणवश उन्हें England की यात्रा स्थगित कर शिकागो जाना आवश्यक हो गया। वह मित्र अपने शिकागो में रहने वाले मित्र के पास अपने आगमन की सूचना देने के लिए एक पत्र लिखा। पत्र के लिफाफे के ऊपर पता लिखने के क्रम में उन्होंने शिकागो के जगह पर England लिख दिया और अपने अचेतन मन में England जाने की दमित इच्छा की पूर्ति की। इसी प्रकार लिफाफे पर शिकागो की जगह England लिखने की भूल हुई। इसी प्रकार Dr. Menninger ने भी उदाहरण दिया है। वे अपने स्वयं की एक भूल का उदाहरण दिया है। वे अपने कार्यवश दूसरे शहर के एक व्यक्ति से मिलने गये, वहाँ उस व्यक्ति ने Dr. Menninger के प्रति कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई। वापस आने के बाद उन्होंने शिष्टतावश उस व्यक्ति को एक धन्यवाद पत्र भेजा जिसमें उन्होंने लिखा कि "मैं आपको धन्यवाद देना

शेष पृष्ठ-5 पर

Page — पृष्ठ-(5)

चाहता हूँ, क्योंकि आपने हमारे सम्मान में कोई शिष्टता नहीं दिखाई" (I wish you to thank you for any courtesies which you have extended to me.) लेकिन वे लिखना चाहते थे "मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ; क्योंकि हमारे सम्मान में आपने काफी शिष्टता दिखाई" (I wish to thank you for many courtesies which you have extended to me.) इस प्रकार के उदाहरणों से लिखने सम्बन्धित भूलों के पीछे अचेतन के दमित इच्छाओं की पूर्ति होना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

4. छपाई की भूलें (Misprints) :—

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि अखबारों, विज्ञापन के पर्चों तथा पुस्तकों आदि में छपाई की भूलें हुआ करती हैं जिसे शुद्धि पत्र द्वारा शुद्ध भी किया जाता है परन्तु संशोधन के बाद भी बार-बार जो छपने की भूलें हुआ करती हैं वे अनजाने में नहीं होती हैं। उसके पीछे भी अचेतन मन में दमित इच्छाओं की पूर्ति को कारण के रूप में Freud ने माना है। इसे एक उदाहरण से स्पष्ट किया गया है। 'Social democratic' अखबार में एक बार किसी उत्सव का समाचार छपा, जिसमें उपस्थित व्यक्तियों में 'His highness crown prince' की उपस्थित होने का समाचार छपा था। परन्तु crown prince की जगह Clown Prince छप गया था जिसका अर्थ होता है विदूषक राजकुमार। अगले दिन इस भूल का सुधार किया गया परन्तु गलती से इस बार crow prince छप गया। इस दुहराई गई गलती की छान-बीन पर पता

शेष पृष्ठ-6 पर

चला कि प्रेस के प्रायः सभी सम्बद्ध कर्मचारी उस राजकुमार से असंतुष्ट और क्षुब्ध रहते थे। वस्तुतः वे उससे घृणा करते थे। यही कारण था कि द्वारा सुधार करने पर भी उनके बारे में अपमानजनक संशोधन छप जाते थे।

5. पहचानने की भूलें (Mistakes of Recognition) :—

अपने दैनिक जीवन की भूलों के तरह ही व्यक्ति प्रायः अपने दैनिक जीवन में किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु की सही पहचान करने में भूल कर देते हैं। कभी-कभी अपने परिचित व्यक्ति को नहीं पहचानता है तो कभी अपरिचित व्यक्ति को भी अपना मित्र समझ बैठता है। किसी व्यक्ति या वस्तु को उपस्थित रहने पर भी दिखाई न पड़ना आदि छोटी-छोटी त्रुटियाँ प्रायः सबसे हो जाया करती हैं। Freud ने इन गलतियों का आधार अचेतन मन में दमित इच्छा-प्रवाह बताया है। पहचानने की भूलें बहुत अंशों में मानसिक अन्तर्द्वन्द्व (Mental Conflicts) के कारण होती हैं। इसी तरह अनिच्छित व्यक्ति या वस्तु के उपस्थित रहने पर भी उन्हें नहीं पहचानना भी अचेतन की [illegible] अनिच्छा के कारण ही होती है ऐसा Freud का मानना है।

अन्य भूलों की तरह ही वस्तुओं को इधर-उधर रख देना और उनको भूल जाना, अनजाने में की गई क्रियाएँ तथा कुछ सांकेतिक क्रियाएँ यथा— उंगली की अंगूठी को बार-बार बाहर-भीतर करना, चाबी के गुच्छे को हिलाना, उंगलियाँ चटकाना इत्यादि भी इसी श्रेणी में आता है।